अपमान के कारण ही रावण राक्षस बन गया। अतः राजाओं को कभी भी कवियों का अनादर नहीं करना चाहिए।

''लङ्कापतेः सङ्कुचितं यशो यद् यत्कीतिपात्रं रघुराजपुत्रः।

स सर्व एवादिकवेः प्रभावो न कोपनीयाः कवयः क्षितीन्द्रैः।।''

इस प्रकार यह काव्य इतिहास के पृष्ठों को अपने आँचल में समेटते हुए भारतवर्ष के गौरव को साभिमान प्रकट करता है।

3.6.6 राजतरङ्गिणी

ऐतिहासिक काव्यों में सर्वाधिक प्रामाणिक एवं तथ्यपूर्ण काव्य राजतरङ्गिणी है। यह काव्य सर्वाधिक दीर्घकाल के इतिहास पर प्रमाणिक सूचना देता है। इसके रचयिता महाकवि कल्हण हैं। इसमें कश्मीर राज्य का इतिहास प्राचीनकाल से लेकर अपने समय (1150 ईस्वी) तक प्रस्तुत है। कल्हण के पिता का नाम चणपक (चम्पक) था। ये कश्मीर के राजा हर्षदेव के विश्वासपात्र सेवक थे। वस्तुतः कल्हण का वास्तविक नाम ''कल्याण'' था। इनका जन्म 1100 ई॰ के लगभग हुआ था।

कश्मीर की राजनीति से पृथक् होकर ''अलकदत्त'' नामक विशेष पुरुष के आग्रह से कश्मीर के विकीर्ण एवं प्रकीर्ण साक्ष्यों को एकत्रित कर कल्हण ने राजतरङ्गिणी की रचना की। इसकी रचना तीन वर्षों में पूर्ण हुई, जो 1148 ई॰ से प्रारम्भ हुई थी। इसकी रचना सुस्सल के पुत्र जयसिंह के शासनकाल में हुई थी। इस ग्रन्थ का यह वैशिष्ट्य है कि इसमें लगभग 2500 वर्षों का राजनीतिक-इतिहास प्रमाण के साथ एवं व्यवस्थित क्रम में उपनिबद्ध किया गया है। इसमें 400 वर्ष की घटनाएँ तो तिथिक्रम से उल्लिखित हैं।

इसमें कुल आठ तरंग (खण्ड) है, जिनमें कुल 7826 पद्य है जो मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द में हैं। प्रारम्भ के छह तरंग छोटे हैं तथा सातवाँ तथा आठवाँ तरंग क्रमशः बड़े हैं। सातवें तरंग में कुल 1732 श्लोक हैं, तथा आठवें में 3449 पद्य है।

कल्हण ने राजतरङ्गिणी के प्रथम तरंग में लिखा है कि यह काव्य प्राचीन ग्यारह ऐतिहासिक ग्रन्थों तथा नीलमत पुराण की सहायता से लिखा गया है–

''दृग्गोचरं पूर्वसूरिग्रन्था राजकथाश्रयाः।

मम त्वेकादश गता मतं नीलमुनेरपि।।''

प्रशस्ति, अभिलेख, शिलालेख, दानपात्र इत्यादि साक्ष्यों के आधार पर राजतरङ्गिणी की रचना हुई है। इसी से वे इतिहासकार की प्रशंसा कुछ यूँ करते हैं–

''श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृता।

भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती।।''

अर्थात् वही गुणी इतिहासकार प्रशंसनीय है जिसकी वाणी न्यायाधीश के समान अतीत घटनाओं में निष्पक्ष है अर्थात् राग एवं द्वेष से सर्वथा मुक्त है। कश्मीर की तात्कालिक स्थिति का वर्णन

इस प्रकार करते हैं– ''कश्मीर के लोग अपने राजा का सम्मान नहीं करते हैं, ये राजभक्त नहीं है, विश्वास करना तो ये जानते तक नहीं हैं। सर्वत्र अराजकता का माहौल है, राज्य के मन्त्रियों में भी परस्पर घोर विरोध है। सैनिकों में अनुशासनहीनता, पुरोहितों में छल, कपट, षड्यन्त्रकारिता है। यहाँ की जनता अब विलासप्रियता में डूब चुकी है। राजकीय सेवक लोभी एवं राजद्रोही हैं। आत्महत्या, पारिवारिक-कलह, विश्वासघात, भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों में कश्मीर डूब चुका है।''

द्वितीय तरंग में प्रतापादित्य नामक राजा का, तृतीय तरंग में गोनन्दीय-वंश का, चतुर्थ तरंग में कर्कोट-राजवंश का, पञ्चम तरंग में उत्पलवंशीय राजाओं का, षष्ठ तरंग में यशस्कर से लेकर रानी दिद्धा का, सप्तम तरंग में लोहरवंश के प्रायः एक सौ वर्षों के शासनकाल का वर्णन है, जो 1003 ई॰ से 1101 ई॰ तक था। इस वंश में संग्रामराज, हरिराज, अनन्त, कलश, उत्कर्ष तथा हर्ष ये छह राजा हुए। अष्टम-तरंग में कल्हण ने स्वयं के युग की घटनाएँ वर्णित की हैं जिनमें उच्चल (1101-11 ई॰) से लेकर जयसिंह (1128-59 ई॰) तक के शासनकाल का सुन्दर वर्णन है।

इसमें वैदर्भी-रीति का बहुत सुन्दर प्रयोग हुआ है। विषय-प्रतिपादन की मुख्यता के साथ प्राञ्जल पदों का अद्भुत वर्णन इस काव्य की विशेषता है।

भाव-पक्ष बहुलता से परिपूर्ण है, रस-परिपाक भी रोमांचकारी है। एक नैतिक शिक्षा का उदाहरण प्रस्तुत है–

''योऽयं परापकरणाय सृजत्युपायं तेनैव तस्य नियमेन भवेद्विनाशः।

धूमं प्रसौति नयनान्ध्यकरं यमग्निर्भूत्वाम्बुदः स शमयेत् सलिलैस्तमेव।।''

इस काव्य में हास्यास्पद, दुष्ट, क्रोधी, लोभी, वञ्चक, प्रजापालक, धर्मात्मा, न्यायप्रिय, स्वार्थी, परोपकारी इन सभी पात्रों का चित्रण पूर्ण तन्मयता से किया गया है। जैसे– दुराचारिणी रानी दिद्धा का वर्णन, छली कायस्थ भद्रेश्वर का वर्णन, इत्यादि।

शान्त-रस प्रधान इस काव्य में पुनर्जन्म, पुण्य, दैवीय शक्ति, शकुनों का मनोहारी वर्णन है। कश्मीर की जनता का मार्मिक चित्रण इस पद्य में हुआ है–

''क्षुत्क्षामस्तनयो वधूः परगृहप्रेष्यावसन्नः सुहत्,

दुग्धा गौरशनाद्यभावविवशा हम्बारवोद्गारिणी।

निष्पथ्यौ पितरावदूरमरणौ स्वामी द्विषन्निर्जितो

दृष्टो येन परं न तस्य निरये प्राप्तव्यमस्मत्प्रियम्।।''

राजाओं के तथा मन्त्रियों के कार्याचरण, नीतिशास्त्र के अनुरूप राजनियमों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन, जनता-जनार्दन के कल्याण एवं अभ्युदय से युक्त प्रतिपाद्य विषय, राजवंशों के इतिहास

का सूक्ष्म एवं तथ्ययुक्त वर्णन इस काव्य के स्तम्भ हैं। यह काव्य भारतीय-राजतन्त्र के गौरवशाली इतिहास की एक अमूल्य झाँकी है।

3.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई में कथासाहित्य एवं ऐतिहासिक काव्यों के बारे में आपने पढ़ा है। इस पाठ में कथासाहित्य के उद्भव से लेकर इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम-दशक तक जो कथासाहित्य लिखा गया है, इसका वर्णन हमने किया है। कथाओं के भेद के अन्तर्गत परिकथा, खण्डकथा, बालकथा, कथानिका, कथा इन भेदों के माध्यम से श्रेणी-विभाग करते हुए कथा के स्वरूप को इंगित करते हुए लोककथा एवं नीतिकथा के उद्देश्य, स्वरूप, वैशिष्ट्य तथा उनकी शिक्षा के बारे में बताया गया है।

वस्तुतः कथा जीवन जीने का एक पथ है जिसके माध्यम से हम शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन को सुखमय तथा आनन्दमय कर सकते हैं। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश तथा कथासरित्सागर की कथाएँ व्यावहारिक ज्ञान के साथ–साथ मूल्य बोध एवं सामाजिक आचार-विचार की शिक्षा प्रदान करती हैं। कथाओं में आये हुए सुभाषित-वचन तो सोने में सुगन्ध जैसे हैं। भारतीय-ज्ञान-परम्परा में ये कथाएँ अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। वेतालपञ्चविंशति नामक कथा बुद्धिवर्धन एवं विवेक को बढ़ाती है। शुकसप्तति नामक कथा के माध्यम से आपने बुरे कार्यों से कथा कैसे बचाती है, यह पढ़ा।

इसके उपरान्त तृतीय इकाई के पंचम प्रक्रम में ऐतिहासिक काव्य के उद्भव और विकास के सन्दर्भ में भारतीय इतिहास के गौरवशाली अतीत एवं राजाओं की परम्परा तथा जनता-जनार्दन के भावों के सबल पक्ष को आपने पढ़ा एवं अच्छी तरह से समझा।

रामायण, महाभारत, पुराण, प्रशस्ति, अभिलेख, मुद्रा-पत्र, शिलालेख, स्तम्भ-लेख हमारे ऐतिहासिक काव्यों के बीज हैं। हर्षचरित और विक्रमाङ्कदेवचरित राजाओं के विविध-कार्यों का प्रतिबिम्ब है। ये ऐतिहासिक-काव्य भारतीय इतिहास के स्तम्भ है, जिनके द्वारा आपने कश्मीर के तात्कालिक स्वरूप तथा स्वर्ग जैसे इसके स्वरूप को भली-भाँति समझा। इसी क्रम में राजतरङ्गिणी जैसा महनीय ग्रन्थ भी आपने पढ़ा। यह भी कश्मीर एवं वहाँ के राजाओं, जनता, मन्त्रियों के बारे में समुचित इतिहास को प्रकट करता है।

इस प्रकार आपने प्रस्तुत इकाई के माध्यम से संस्कृत-साहित्य के कथासाहित्य एवं ऐतिहासिक-काव्यों के बारे में, उनकी व्यापकता के विषय में, उनके विविध भावों को पढ़ा, समझा एवं जाना।

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. हर्षचरित – श्री शंकरकवि विरचित ''संकेत'' व्याख्या सहित, सम्पादक – जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2012

2. हितोपदेश – सम्पादक–नारायण राम आचार्य, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहरनगर, दिल्ली, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2011
3. पञ्चतन्त्र – पं॰ रामचन्द्र झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, षष्ठ संस्करण, 1991
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ॰ उमाशंकर शर्मा ''ऋषि'', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2008
5. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–जगन्नाथ पाठक, (सप्तम खण्ड), उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, प्रथम संस्करण, 2000

3.9 अभ्याय प्रश्न

1. कथासाहित्य के उद्भव पर प्रकाश डालिए।
2. पञ्चतन्त्र से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
3. ''विक्रमाङ्कदेवचरित काव्य इतिहास में श्रेष्ठ है'' इस कथन को पठितांश के आधार पर सिद्ध कीजिए।
4. राजतरङ्गिणी के काव्य-वैशिष्ट्य का प्रतिपादन कीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY